शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

आजादी के बाद का मध्यवर्ग और उसकी आधुनिकता

अरविन्द कुमार उपाध्याय (शोधार्थी)
महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

अठारहवीं सदी में यूरोप में चले वैचारिक आंदोलन को ज्ञानोदय के नाम से जाना गया। इस आंदोलन की मूल प्रवृत्ति में आधुनिकता के भाव निहित थे। तर्क के आधार पर चीजों को देखना, समता और न्याय, सामाजिक तथा वैज्ञानिक आदि के द्वारा किसी समस्या का हल करना इस युग की विशेषता रही है। धर्म, दर्शन आदि को तर्क की कसौटी पर रख कर नए सिरे से व्याख्या करना आधुनिकता की पहचान है। यही कारण है कि उन्नीसवीं सदी में सामाजिक और राजनीतिक प्रयोगों ने आधुनिकता के वैचारिक महत्त्व को और भी मजबूत किया है। गांधी से लेकर तमाम भारतीय मनीषियों ने आधुनिकता और उसके नकारात्मक पहलुओं की ओर लोगों का ध्यान दिलाया है। प्रस्तुत शोध पत्र में आजादी के बाद के मध्य वर्ग और उसकी आधुनिकता पर विचार किया गया है।

भूमिका

आधुनिकता वैज्ञानिकता की राह पर चलकर प्रगतिशील चेतना की माँग करता है। औद्योगीकरण और शिक्षा इसके मूल में है और इन्हीं के बलबूते वह आगे बढ़ता है। रामधारी सिंह दिनकर इस संदर्भ में लिखते हैं., "उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में जन्मी इतिहासपरक वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील चेतना आधुनिकता है। औद्योगीकरण आधुनिकता की पहचान है। साक्षरता का सर्वव्यापी प्रसार आधुनिकता की सूचना देता है। नगर.सभ्यता का प्राधान्य आधुनिकता का गुण है। आधुनिकता बुद्धिवाद के तीखे औज़ार से मनुष्य की सभी जंजीरें काटकर उसे मुक्त कर देती हैं, यह दूसरी बात है कि मनुष्य इस स्वतंत्रता का इस मुक्ति का उपयोग कर पाता है या नहीं।1

भारत में आधुनिकता के उदय की परिस्थितियों पर अगर ठीक ढंग से ध्यान दिया जाए तो एक बात निकलकर सामने आई कि आधुनिकता केवल भौतिक आधारों से ही तय नहीं होती अपितु सामाजिक आधारों का होना भी उसके लिए अति.आवश्यक है। अगर आधुनिकता के मूल में जाएँ तो हम पाते हैं कि यह भौतिकवाद की प्रक्रिया की उपज नहीं है बल्कि बुद्धिवाद की प्रक्रिया का प्रतिफलन है।

आधुनिकता प्रगति का दूसरा नाम है। विज्ञान और तकनीकी तथा सामाजिक गतिशीलता की बुनियाद पर उसके विकास की गति का पता चलता है। उदाहरण स्वरूप पहले की अपेक्षा उद्योगों का विकास, विज्ञान का प्रयोग आम जन.जीवन तक था। स्त्री और दलित जैसे प्रश्न समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित आदि आधुनिकता की निशानी है। आधुनिकता वास्तव में देशकाल के बोध का परिचायक है। अपनी प्रवृत्ति में आधुनिकता मानव प्रगति द्वारा जोड़े

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

गए जीवन के नए अर्थ और नए परिवेश की स्थिति है।2

प्रगति आधुनिकता की पहली शर्त है। हालांकि इस तरह के विचार एड्म स्मिथ आदि विचारकों ने दिए थे, किंतु इसे विस्तृत रूप में व्याख्या मार्क्स के प्रगतिवादी विचारों में की गई। हरबंश मुखिया लिखते हैं., "इस विचारधारा की शुरूआत तो अठारहवीं सदी में एड्म स्मिथ और अन्य विचारकों से हुई थी, किंतु इसकी पूर्ण रूप से विकसित रूपरेखा कार्ल मार्क्स के प्रगति की अवस्था में तैयार हुई। आज हम इस विचारधारा में निहित प्रकृति और पर्यावरण के ध्वंस के खतरे से परिचित एवं चिंतित हो रहे हैं, किंतु इस चिंता से हम अभी हाल में ही ग्रस्त हुए हैं।3

प्रायः विद्वानों ने भारत में आधुनिकता को औद्योगिक.क्रांति के फलस्वरूप माना है। यह विवाद का विषय रहा है। अगर आधुनिकता अंग्रेजों द्वारा स्थापित उद्योगों से हुई तो यह विचारणीय प्रश्न है कि इन्हीं उद्योगों के कारण भारत में देशी उद्योग और व्यापार को लगभग समाप्त कर दिया है। बुनकर, कारीगर, किसान आदि की स्थिति दिनोंदिन दयनीय होती गई। मूल्यों का क्षरण तथा सांप्रदायिकता जैसे असमाजिक तत्त्वों को बढ़ावा मिला। क्या ये सब आधुनिकता के लक्षण हैं ? एक बात और जो प्रायः सुनने को मिलती है कि आधुनिकता पूँजीवाद का पर्याय है। अर्थात् उसे पूँजीवादी परियोजना के अंतर्गत स्वीकार किया जाने लगा। इस तरह के तर्क निराधार हैं। अजय तिवारी इस तर्क का खंडन करते हुए अपनी किताब 'आधुनिकता पर पुनर्विचार' में लिखते हैं, "आधुनिकता अगर तर्कवाद, मानववाद और आर्थिक प्राविधिक विकास के मूल्यों से परिभाषित होती है तो श्रमिकों की दासता प्रकृति का दोहन पूँजी के अंतरराष्ट्रीयकरण से भी परिभाषित होती है। वह अगर स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व से परिभाषित होती है तो विषमता, परतंत्रता और उत्पीड़न से भी परिभाषित होती है। उसने ज्ञान, अनुशासन, मानवाधिकार ही नहीं दिए साम्राज्यवादी उपनिवेश भी दिए। फिर भी आधुनिकता और पूँजीवाद को पर्याय मान लेना भूल है।4

नब्बे के दशक में खासकर भूमंडलीकरण में मध्यवर्ग बाजार और संचार जैसी चीजों में संलिप्त होने के कारण वर्ग हित और संघर्ष उसके लिए रूढ़िग्रस्त हो गए हैं। इस संदर्भ में अजय तिवारी लिखते हैं. पूंजी की हितचेतना अत्यंत संगठित और जागरूक है, पर जनता की हित.चेतना बराबर कुंठित और खंडित हो रही है.। वर्ग की चर्चा को रूढ़िवाद बनाना इस विडंबनापूर्ण स्थिति का द्योतक है।5

पूँजी का अपना चरित्र है। वह अपने अनुसार व्यक्ति और समाज को ढालने की कोशिश करती है। उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग तक इसे पाने के लिए रात.दिन मेहनत कर रहे हैं। जीवन की सारी सार्थकता उसे पूँजी या धन पाने में दिखाई देती है। यही कारण है कि वर्तमान समय में खासकर मध्यवर्गीय समाज में जो मूल्यहीनता और संत्रासबोध है, उसके केंद्र में पूँजी है।

आजादी के बाद का मध्यवर्ग

स्वतंत्रता के बाद देश की कुल जनसंख्या की आबादी का एक छोटा.सा भाग मध्यवर्ग का था। मध्यवर्ग जिस वर्गीय भू.भाग पर रह रहा था वहाँ सीमित रूप में सामंत तथा पूँजीपति वर्ग रहते

थे। इन दोनों की अपेक्षा अधिकारहीन किसानों और मजदूरों की संख्या अत्यधिक थी। मध्यवर्ग उपर्युक्त दोनों वर्गों के बीच अपने रंग.रुतबे के कारण समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान बनाए हुए था। लेकिन आजादी के बाद उसमें सामाजिक संवेदनशीलता, आदर्शवाद, सामाजिक मान्यताओं के प्रति चिंता तथा आत्मसंयम जैसे गुणों के विकास की आवश्यकता उसे महसूस हुई।

हम देखते हैं कि आजादी के आंदोलन के समय मध्यवर्ग के सामने नैतिक और बौद्धिक विरासत के रूप में गांधी और नेहरू के रूप में दो विभूतियाँ थीं। गांधी और नेहरू के व्यक्तित्व ने भारतीय जन.मानस खासकर मध्यवर्ग को काफी आकर्षित किया। इस संदर्भ में पवन कुमार वर्मा अपनी किताब 'मध्यवर्ग की अजीब दास्तान' में लिखते हैं. शिक्षित भारतवासियों को गांधी नैतिकता के परम लक्ष्य के लिए प्रयासरत लगते थे। साधन को साध्य की भाँति ही महत्त्वपूर्ण मानने पर गांधी के लगातार ज़ोर और सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता के प्रश्न पर उनका अडिग आग्रह मध्यवर्ग द्वारा न केवल आजादी की लड़ाई के लिए आजादी के बाद के भारत को चलाने के लिए भी अनिवार्य मान कर आत्मसात कर लिया गया था। नेहरू की दृष्टि में अतीत के पिछड़ेपन से मुक्ति और विज्ञानए तकनीकी व उद्योगीकरण के आधार पर प्रगत्याकांक्षी भारत के विचार का आग्रह था। पश्चिमी तर्कवाद और उदारतावाद की खुराक पर पला शहर.केंद्रित मध्यवर्ग ष्राष्ट्र.निर्माण के लिए अधीर था। इसने नेहरू के इस आग्रह को हाथों.हाथ लिया। साथ ही गरीबों के लिए गांधी और नेहरू के सरोकारों को भी मध्यवर्ग ने वंचितों के प्रति केवल जज्बाती जुड़ाव के रूप में न लेकर राज्य व समाज द्वारा उनकी समस्याओं को गहराई से समझने और दूर करने की जरूरत के रूप में समझा।6

गांधी ने अपने जीवन को दलितों, वंचितों तथा हरिजनोत्थान के लिए समर्पित कर दिया था। कथनी और करनी की सीमा को समाप्त कर जीवन में त्याग और शुचिता पर बल दिया। वहीं वामपंथी विचारों को तवज्जों देते हुए नेहरू ने अपने आपको पिछड़े हुए लोगों और सर्वहारा की माँगों को आत्मसात् करते हुए आजाद भारत के निर्माण में लग गए। नेहरू के बौद्धिक चिंतन में साम्राज्यवाद के मार्क्सवादी विश्लेषण की एक महत्त्वपूर्ण जगह थी। इससे उन्हें उपनिवेश और उपनिवेशवादियों के बीच आर्थिक संबंधों को गहराई से समझने में मदद मिलती थी। नेहरू ने इस विश्लेषण को कभी नहीं छोड़ा।7 गांधी का सादगीपूर्ण जीवन और किसी भी परिस्थिति में अपने आपको ढाल सकने का उनका नैतिक साहस ने उन्हें मध्यवर्ग में एक आदर के रूप में देखा गया तो वहीं नेहरू सभ्रांत परिवार से होते हुए भी अपने आपको आम.जन.जीवन से जोड़ा। मध्यवर्ग खादी; कपास भले ही अपने आम जीवन में उपयोग न करे फिर भी खादी उसके जीवन का प्रेरणा स्रोत बना। गांधी के सादगी.भरे जीवन और कथनी व करनी की एकता ने मध्य वर्ग का मन मोह लिया। मध्यवर्ग के सदस्यों के लिए उनका महत्त्व अत्यंत सादगी का जीवन जीने वाले भारतीय महात्माओं जैसी हस्ती के रूप में तो था ही, लेकिन उसका अधिक महत्त्वपूर्ण असर भारत जैसे गरीब देश में भौतिक कामनाओं पर आत्मसंयम रखने के रूप में पड़ा। गांधी के सादगीपूर्ण जीवन को वैसा का वैसा ही अपना लेने के बजाए मध्यवर्ग ने सदा जीवन.उच्च

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

विचार के उनके उसूल को आत्मसात कर लिया। गांधी को श्रद्धा की भावना से इसलिए देखा गया क्योंकि उनमें गरीबों जैसा जीवन जीने का साहस था और कुलीन वर्ग से आए नायक नेहरू को इसलिए सराहा गया कि उन्होंने ऊंचे तबके के आरामतलब व सुविधाभोगी जीवन को बड़ी आसानी से त्याग दिया था। मध्यवर्ग के कुछ ही सदस्यों ने नियमित चरखा कातने और खादी के वस्त्रों को अपनाया, लेकिन खादी से जुड़ी पवित्रता और सादगी ने उसे यह संदेश तो दे ही दिया कि भारत जैसे गरीब देश के संदर्भ में भद्दी व असंगत लगने वाली धनी वर्ग की खर्चीली जीवन.शैली पर संयम रखना जरूरी है।8

मध्यवर्ग को एक ऐसी विचारधारा की आवश्यकता थी जो उसकी समस्या का हल तो कर सके साथ ही और भी कुछ। हालांकि स्वतंत्रता के बाद अर्थात् नेहरू के शासनकाल तक इन चीजों पर ध्यान दिया गयाए लेकिन आजादी के 20.25 वर्षों के बाद उन्हें इन जरूरतों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए रास्ते तलाशने पड़े। एक बात और जो स्वतंत्र भारत के मध्यवर्ग के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण था. सामाजिक प्रतिष्ठा। इक्कीसवीं सदी के नव.मध्यम वर्ग की तरह वह पूँजी को केंद्र में तो रखता था, लेकिन उसके साथ-साथ वह सामाजिक प्रतिष्ठा भी बनाए रखना चाहता था। नेहरू के समय भारतीय समाज में मध्यवर्गीय संयुक्त परिवार की धारणा कायम थीए खासकर गाँवों में। ये संयुक्त परिवार आर्थिक रूप से मजबूत और खुशहाल होने के बावजूद भी अपनी समृद्धि के प्रदर्शन से बचते थे। कारण स्पष्ट था, वे अपने संस्कार में इतने बंधे हुए थे कि इस तरह का प्रदर्शन उन्हें संस्कारहीन लगता था। उस समय सामाजिक प्रतिष्ठा और आदर जैसी चीजें भौतिक प्रदर्शन एवं समृद्धि को संतुलित करने का काम करती थी। गरीबों और असहायों के लिए वह संवेदनशील रवैया अपनाता थाए लेकिन अपनी निजता को बचाकर। दरअसलए भारतीय मध्यवर्ग सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखना तो चाहता था लेकिन आर्थिक हितों में की गई कटौती का वह मुखर विरोधी था। बावजूद इसकेए गरीबोंए मजदूरों और असहायों की समस्याओं का समाधान जरूरी थी। समाज का पूँजीपति वर्ग इस वर्ग.विशेष पर ध्यान देना जरूरी नहीं समझता था, लेकिन मध्यवर्ग इससे पूरी तरह मुक्त नहीं था। नेहरू सरकार के समय से ही राज्य धीरे.धीरे मजबूत होने लगा। प्रथम पंचवर्षीय योजना 1951-1956 द्वितीय पंचवर्षीय योजना 1956-1961 तथा तृतीय पंचवर्षीय योजना 1961-1966 में क्रमशः कृषि को प्राथमिकता के साथ.साथ सर्वांगीण विकास पर बल दिया गया। इस संदर्भ में बिपन चन्द्र 'समकालीन भारत' में लिखते हैं. जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में भारत ने औद्योगिक.क्रांति के पहले और दूसरे चरणों को जोड़कर उस खाई के ऊपर पुल बनाने की मशीन उत्पादन करने वाली मशीन का निर्माण करके और स्टील, सीमेंट तथा विद्युत उत्पादन का विकास करके। यह एक जरूरी कार्यभार था क्योंकि जिसे यूरोप ने डेढ़ सौ सालों में किया था उसे हम एक या दो दशकों में पूरा कर लेना चाहते थे। परंतु यह अपर्याप्त था। क्योंकि जब हम अतीत को पकड़ने के लिए दौड़ रहे थे तब वर्तमान विकसित दुनिया में भविष्य में प्रवेश कर रहा था।9

औद्योगीकरण के साथ उससे जुड़ी लौह एवं इस्पात, अलौह धातुओं, भारी रसायन, भारी

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

इंजीनियरिंग और मशीन.निर्माण उद्योगों को बढ़ावा देने तथा आत्म.निर्भर एवं स्फूर्ति अर्थव्यवस्था के साथ कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। इन पंचवर्षीय योजनाओं में राज्य की महती भूमिका तो थी ही, साथ ही गरीबी से जूझ रही जनता को निजता दिलाने में भी कारगर सिद्ध हुई। राज्य द्वारा गरीब.मजदूरों की ज़िम्मेदारी उठा लेने से भारतीय मध्यवर्ग को उसके लिए अब त्याग या संवेदनशील होने की आवश्यकता न थी। वह राज्य के नाम पर अपनी नैतिक जिम्मेदारियों से कतराने लगाए जो आगे चलकर वर्ग.विशेष तक सीमित हो गया।

मध्यवर्ग की जो सबसे बड़ी बात थी वह आधुनिकता के प्रति मोह, लेकिन इसकी भी कुछ समस्याएँ थी। मध्यवर्ग ने जिस आधुनिकता को अपनायाए उससे परंपरा से पूर्ण रूप से मुक्ति पाना संभव नहीं था। क्योंकि औपनिवेशिक शासन.व्यवस्था में अतीत एक आदर्श के रूप में मध्यवर्ग के स्मृति में अंकित हो गया था। इस संदर्भ में जवाहर लाल नेहरू लिखते हैं. उभरते हुए मध्यवर्ग में अपने महत्त्व के प्रति आश्वस्त होने एवं पराधीनता के कारण उत्पन्न कुंठा और अपमान के बोध का शमन करने के लिए कहीं न कहीं अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने की इच्छा थी।10 मध्यवर्ग बाह्य जीवन में आधुनिकता और उसके प्रभाव को स्वीकार तो करता था लेकिन व्यक्तिगत जीवन में वह परंपरा और आधुनिकता के द्वंद्व में उलझ कर रह गया।

इतिहास पर दृष्टि डाले तो हम पाते हैं कि स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति की डोर मध्यवर्ग खासकर अभिजनों के हाथों में थी। समाज का वंचित तबका या पिछड़ा.वर्ग भारतीय राजनीति के प्रारंभिक अवस्था में नगण्य था इसलिए इन अभिजनों पर शूद्रों को एक खास दायरे में लाने का कोई नैतिक दबाव नहीं था। हालांकि आंबेडकर और गांधी की मृत्यु ;1948 के पहले तक सामाजिक पुनर्रचना के मुद्दे को जोरदार तरीके से उठाया गया और कई जगह सहमतियों एवं असहमतियों के बीच उनकी आवाज को तवज्जो दी गई। लेकिन गांधी जी की मृत्यु के पश्चात् उनके राजनीतिक उत्तराधिकारियों द्वारा उन्हें उपेक्षित कर दिया गया था। कारण स्पष्ट था कि गांधी सामाजिक संरचना में समान भागीदारी के हिमायती थे। समाज के पिछड़े वंचितों को मुख्य धारा से जोड़ने की बात उनकी सार्वजनिक थी। हालांकि गांधी और आंबेडकर में जातीय.संरचना तथा अन्य मुद्दे पर सैद्धांतिक मतभेद थे। दोनों अलग-अलग तरीके से इस समस्या का हल खोजने में प्रयासरत थे। फिर भी गांधी आंबेडकर के भारतीय राजनीति में न केवल उनके महत्त्व को स्वीकारते थे बल्कि आंबेडकर द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्य को सराहते भी थे। यही कारण है कि आजादी के बाद लगभग अस्सी के दशक तक भारतीय मध्यवर्ग पर अभिजनों का प्रभुत्व ;ऐसा नहीं है कि इस वर्ग में केवल अभिजनों की ही संख्या ज्यादा थी बल्कि अन्य जातियों का भी समावेश था लेकिन नाम.मात्र का।

गांधी और नेहरू दो ऐसे व्यक्ति थे जो एक सत्ता में रहकर पुरानी मान्यताओं, धर्म का कर्मकाण्डीय रूप सामाजिक विकृतियाँ आदि की जगह नए ज्ञान-विज्ञान तर्कणावाद, बौद्धिकता के साथ-साथ आधुनिक औद्योगीकरण पर बल दिया। कहना न होगा कि नेहरू कहीं न कहीं

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

पश्चिम से प्रभावित थे इसलिए उनकी नीतियों और कार्य में पश्चिम का प्रत्यक्ष था अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव अवश्य रहता था। लेकिन जब हम गांधी के विषय में बात करेंगे तो पाएंगे कि गांधी पाश्चात्य सभ्यताए संस्कृति, धर्म, दर्शन, राजनीति, उद्योग आदि से भली.भाँति परिचित थे। फिर भी भारतीय संदर्भ में उसके अंधानुकरण के खिलाफ थे। उन्हें विश्वास था कि. अंग्रेजी अर्थशास्त्र की नकल भारत को तबाह कर देगी। गांधी का फार्मूला था कि गरीबी उस वक्त तक नहीं खत्म हो सकती जब तक हर भारतीय निजी तौर पर उत्पादन और उपभोग की अपनी दिनचर्या में उसके उन्मूलन का प्रयास नहीं करेगा। गांधी सादगीपूर्ण एवं किफायती जीवन.मूल्यों से बंधे थे।11 गांधी ने धार्मिक सहिष्णुता की प्रेरणा दुनिया के सभी धर्मों के सार.तत्त्वों से ली थी। यही कारण है कि वे सांप्रदायिकता जैसे गंभीर मसले पर लोगों को सीख तो देते थे, लेकिन स्वयं धार्मिक बने रहते थे।

जवाहर लाल नेहरू की मृत्यु के बाद शासन की बागडोर लाल बहादुर शास्त्री अल्प समय ;लगभग डेढ़ वर्ष तक के लिए संभाला। ताशकंद में लाल बहादुर शास्त्री की असमय मृत्यु ने एक बार फिर सत्ता जवाहर लाल नेहरू की लड़की इंदिरा गांधी के पास आ गई। अर्थात् इंदिरा गांधी 1966 में भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री के रूप में पदभार ग्रहण किया। लाल बहादुर शास्त्री से लेकर इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री तक कांग्रेस के नेताओं में सत्ता पाने की जो ललक दिखाई दी उससे पहले नेहरू सरकार में भी नहीं दिखाई दी। भारतीय राजनीतिक इतिहास में लाल बहादुर शास्त्री और इंदिरा गांधी का वह दौर था जहाँ बड़े.बड़े नेता अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए जोड़.तोड़ की राजनीति करने लगे और यह कहना स्वाभाविक होगा कि यहीं से शासन.व्यवस्था में स्वार्थ, भाई.भतीजावाद जैसी अपसंस्कृति का चलन भी शुरू हुआ। नेहरू के बाद उनके विचारों का अनुपालन केवल नाम.मात्र के लिए ही हुआ। आमतौर पर यह माना जाता है कि नेहरू का आर्थिक चिंतन नियोजित उद्योगीकरण के सोवियत मॉडल से कुछ ज्यादा ही प्रभावित था। दरअसल नेहरू के लक्ष्य और कोशिशों की यह समझ बेहद सरलीकृत है।12 इन नेताओं का जो सार्वजनिक दायरा था जनता के प्रति जो जवाबदेही थी वह धीरे.धीरे गौण होने लगा। इन स्थितियों का सीधा प्रभाव मध्यवर्ग पर पड़ा। अब वह अपनी अस्मिता के प्रति पहले के मुक़ाबले और भी चिंतित होने लगा।

संजय गांधी द्वारा सुंदरीकरण के नाम पर शहरों से झुग्गियाँ हटाने तथा अविवाहित पुरुषों, वृद्ध महिलाओं की नसबंदी ने समाज में सरकार के खिलाफ असंतोष पनपने का मौका दिया। लेकिन मध्यवर्ग में इसका ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा। शहरों के नाम पर किया जा रहा सुंदरीकरण दरअसल भारतीय मध्यवर्ग के घरों के आसपास का सुंदरीकरण था। इसी तरह जनसंख्या को प्रमुख समस्याओं की वजह बताकर किया गया नसबंदी कार्यक्रम भारतीय मध्यवर्ग के अनुकूल था। इसके पीछे कारण यह था कि शहरी मध्यवर्ग में हम दो हमारे दो के विचार प्रभावित हो चुके थे। इस स्थिति में निम्नवर्ग द्वारा बच्चों की अत्यधिक पैदाइशी और गाँवों में समुचित रोजगार न होने से शहरों पर इसका सीधा प्रभाव पड़ा। अर्थात् लोग काम की तलाश में शहर की तरफ भागते

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

थे जिसकी वजह से मध्यवर्ग के लोगों की सुविधाओं में कटौती होने लगी। यही कारण है कि संजय गांधी द्वारा किए गए इस निंदनीय काम को भी मध्यवर्ग की एक मौन सहमति थी। इंदिरा गांधी की हत्या 1984 और राजीव गांधी का चालीस वर्ष की उम्र में प्रधानमंत्री बनना दोनों चीजें मध्यवर्ग के लिए महत्त्वपूर्ण थी। प्रधानमंत्री बनने से पहले राजीव गांधी को भले ही राजनीति का कोई तर्जुबा न हो, लेकिन अपनी आधुनिक.दृष्टि और कंम्यूटर तथा नई प्रौद्योगिकी पर बल देने की वजह से वे मध्यवर्ग में काफी लोकप्रिय हुए।

जीवन.शैली के स्तर पर एक बहुत बड़ा बदलाव टेलीविज़न के रूप में हमें राजीव गांधी के शासन.काल में दिखाई देता है। कृषि दर्शन के बहाने टेलीविज़न धीरे.धीरे गाँव में विस्तार पाता गया। लेकिन यह कृषि दर्शन तक ही सीमित नहीं रहा। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तरीके से शहरी.जीवन और उसकी शैली को परोसा जाने लगा। इसका सीधा प्रभाव उन मझोले किसानों पर पड़ा जो मध्यवर्ग बनने की दहलीज पर खड़े थे। शहरी.जीवन के प्रति ललक ने उनमें कई द्विगुणों को जन्म भी दिया जो आगे चलकर मंडल आयोग के बाद की स्थितियों में दिखाई देता है।

भारतीय मध्यवर्ग के जीवन.शैली पर सबसे बड़ा बदलाव भारत के दो प्रधानमंत्री के कार्यकाल में हुआ। पहला राजीव गांधी के समय में और दूसरा वीपी सिंह के समय में। राजीव गांधी ने कंप्यूटर और नई प्रौद्योगिकी पर बल दिया जिसका दूरगामी प्रभाव पड़ा। हालांकि शुरूआती दिनों में कंप्यूटर के प्रयोग पर राजीव गांधी की काफी आलोचना की गई। फिर भी कंप्यूटर, टेलीविज़न, नए वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित तकनीक ने समाज में क्रांति ला दी। आदमी घर बैठे देश.विदेश की संस्कृतियों और शहरी.जीवन के प्रति आकर्षित होने लगा, जिसकी वजह से आज उसे अपनी ही संस्कृति और सभ्यता हेय.सी लगने लगी है। पढ़ा-लिखा मध्यवर्गीय व्यक्ति अपनी भाषा में बातचीत करना, उसके स्टेट्ससिंबल का सूचक बन गया है।

दूसरा महत्त्वपूर्ण बदलाव हमें वीपी सिंह के कार्यकाल में दिखाई देता है। वीपी सिंह के कार्यकाल में आरक्षण के कार्यान्वयन से सामाजिक बदलाव का जो रूप सामने आया वह इक्कीसवीं सदी में स्पष्ट दिखाई देता है। सबसे पहला बदलाव सरकारी वर्गीकरण के नाम पर आधारित आरक्षण दिया गया। जैसे. पिछड़े ;ओबीसी, दलित ;अनुसूचित जातियाँद्धए आदिवासी ;अनुसूचित जनजातियाँ।

आरक्षण को क्रियान्वयन करने वाले राजनेता आरक्षण की नीति को आरक्षण की राजनीति में मुख्य अंतर कर नहीं पाए। आरक्षण की उस राजनीति में भारतीय नेता एक सुनहरे भविष्य को देखते हुए पारंपरिक वर्ण और जाति को आधार बनाकर राजनीति करने लगे। केंद्र और राज्य में कई ऐसी पार्टियाँ उभरी या अपने विचार में परिवर्तन लाए हैं जिनके पास जाति की राजनीति के अलावा न तो कोई राष्ट्रीय या सामाजिक नीति है और न ही किसी तरह की नैतिकता। इस संदर्भ में आशीष नंदी नयी राजनीतिक संस्कृति समाज और लोकतंत्र नामक शीर्षक में लिखते हैं. भारतीय मध्यवर्ग का एक हिस्सा हमेशा से ही एक धर्म, एक भाषा, एक संस्कृति वाले राष्ट्र.राज्य की कल्पना करता रहा

है। उसके परिवार में पश्चिमी समाज भी इसी तरह के राष्ट्र.राज्य रहे हैं। स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्यधारा ने इस मॉडल को अपनाने से इंकार कर दिया था क्योंकि राष्ट्रीय नेतृत्व अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए एक वैविध्य संपन्न समाज को गोलबंद करना चाहता था। वह भारतीय सभ्यता के प्रति प्रतिबद्ध महसूस करता था। उसकी निगाह में यह सभ्यता सामाजिक विविधता पर निर्भर थी। वह एक ऐसे देश में नागरिक समाज ;सिविल सोसाइटी के भविष्य को लेकर चिंतित था जहाँ एक स्तर पर सभी लोग अल्पसंख्यक हैं। यह चिंतन अब धीरे.धीरे कमजोर होता जा रहा है और उसकी जगह लेने के लिए बहुसंख्यकवाद कदम बढ़ा रहा है।13 जिसका नेतृत्व भारत के नव.कट्टरपंथियों के हाथों से हो रहा था। संचार के माध्यमों के सहारे लोगों के विचारों में परिवर्तन करके ये अपनी राजनीतिक रोटियाँ आज सेक रहे हैं।

नव.मध्यम वर्ग

नया मध्यवर्ग कहने का तात्पर्य यह है कि आजादी के पहले और आजादी के बाद के दो दशकों तक के मध्यवर्ग से यह ;नया मध्यवर्गद्ध भिन्न है। नया मध्यवर्ग से पहले के मध्यवर्ग के पास जीवन के कुछ उसूल थे। सामाजिक उत्तरदायित्व की वजह से समाज में उसे विशिष्ट स्थान मिला था। गांधी और नेहरू के जीवन की सुचिता को इसने कई वर्षों तक आत्मसात कर आगे बढ़ने की कोशिश भी की थी। किंतु भारतीय संविधान के अमल में आने से और राजनीतिक उठा.पटक तथा भूमंडलीकरण के कारण इस नए मध्यवर्ग में आमूलचूक परिवर्तन हुए। भारतीय संविधान के आने से यह नया मध्यवर्ग समाज के प्रति अपने दायित्व को राज्य का दायित्व बताकर अपने आपको सामाजिक नैतिक दायित्व से मुक्त कर लिया। अब वह समाज के पिछड़े हुए लोगों, सामाजिक मुद्दों आदि को राज्य की समस्या बताकर सिर्फ अपने हित के लिए सोचने लगा।

इस नए मध्यवर्ग के चरित्र में परिवर्तन का दूसरा कारण राजनीतिज्ञों की सत्ता.लोलुपता और अर्थ के प्रति मोह। नेहरू की मृत्यु के बाद भारतीय राजनीति में खासकर इंदिरा गांधी के समय में भारतीय नेताओं का जो छद्म रूपी चेहरा सामने आया, उससे इस नए मध्यवर्ग के मन में इन नेताओं की जो छवि ;त्याग, कर्तव्यपरायणता, राजनैतिक सिद्धांत बनी थी, वह धीरे.धीरे दरकने लगा। कुर्सी पाने के लिए जो छद्म राजनीतिक खेल खेला गया उससे मध्यवर्ग का इनके प्रति बना मोह धीरे.धीरे कम होने लगा। कहना न होगा कि इस राजनीतिक परिवर्तन का सबसे ज्यादा प्रभाव इस नए मध्यवर्ग पर पड़ा। नए मध्यवर्ग ने अपने हितों को साधने अथवा सुरक्षित रखने के लिए राजकीय.नीति के कार्यान्वयन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने लगा। अब वह मानने के लिए यह तैयार नहीं है कि उसके हित से बड़ा कोई दूसरा हित हो सकता है। मध्यवर्ग की यह दृष्टि अब उसके सिद्धांत में ही नहीं बल्कि उसके व्यवहार में भी दिखाई देने लगा।

परिवर्तन का तीसरा और अंतिम महत्त्वपूर्ण कारण भूमंडलीकरण है। भूमंडलीकरण के कारण पूरे विश्व को एक ग्राम के रूप में व्याख्यायित किया जाने लगा है। संचार माध्यम, टेलीविज़न, रेडियो, इंटरनेट, मोबाइल फोन इत्यादि की वजह से व्यक्ति घर बैठे देश.दुनिया की संस्कृतियों से

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

न केवल रू.ब.रू हो रहा है, बल्कि जाने.अनजाने में वह उसे आत्मसात भी कर रहा है। कहना न होगा कि व्यक्ति उसके बाह्य सौंदर्य से प्रभावित तो हुआए लेकिन शैली के स्तर पर।

हम देखते हैं कि नब्बे के दशक में तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने वित्तमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह की मदद से आर्थिक सुधारों की घोषणा की। आर्थिक सुधारों से तात्पर्य था कि भारत का बाजार विश्व बाजार के लिए खोल देना। अर्थात् सरकारी नियंत्रण से भारतीय अर्थ.व्यवस्था को विश्व अर्थ.व्यवस्था के लिए मुक्त करना। आर्थिक उदारीकरण के बाद जिस तरह से नए मध्यवर्ग का उभार हुआ है, वह भारतीय इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। सोवियत संघ का विघटन तथा कम्युनिस्ट.व्यवस्था का लगभग खत्म होने से और पूंजीवादी.व्यवस्था कायम होने से भारत समेत विश्व के कई देशों में आर्थिक उदारीकरण का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगा, वहीं सरकारी नौकरियों में आरक्षण की वजह से सामाजिक ताना-बाना टूटने के आसार दिखाई देने लगे। मंडल और कमंडल के बीच उलझी जनता के बीच आए भूमंडलीकरण की वजह से एक बड़े तबके लिए राहत भरी सांस थी। पढ़े-लिखे नौजवान लोगों ने सरकारी नौकरियों में आरक्षण को लेकर उलझने की बजाए प्राइवेट कंपीनियों के पैकेज पर काम करना ज्यादा बेहतर समझा। इसी दौर में हुई कंप्यूटर.क्रांति ने देश के तमाम छोटे.बड़े शहरों के घरों और दफ्तरों में कंप्यूटर का जाल बिछा दिया और देखते ही देखते इक्कीस दिन से लेकर दो साल तक के प्रशिक्षण वाले कंप्यूटर इंजीनियर खड़े हो गए। अर्थव्यवस्था खुली और संचार बढ़ा तो कॉल सेंटर एक नए धंधे के रूप में उभरा, जिसने नौकरीपेशा मध्यवर्ग के लिए दिन.रात एक कर दिए। इक्कीसवीं सदी ने दो बड़े बदलाव देखे। मीडिया की दुनिया में चौबीस घंटे के समाचार और मनोरंजन चैनलों की बाढ़ आ गई और हर मेज पर एक पीसी देने का बिल गेट्स का सपना हर हाथ में आ पहुँचे एक मोबाइल की हकीकत में बदल गया।14

देश में जिस आर्थिक उदारीकरण को लागू किया गया उसका उम्मीद से कही बेहतर परिणाम सामने दिखाई देने लगा। अंग्रेजी शिक्षित शहरी युवा.वर्ग के सामने अवसरों तथा कमाई के नए.नए साधन खुलने लगे। साथ ही साथ इस नए मध्यवर्ग की आमदनी के समुचित उपभोग के लिए उपभोक्ता बाजार को भी विकसित किया जाने लगा। अगर उदारीकरण के मूल में देखें तो विश्व को भूमंडलीकृत अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण साझीदार बनाना है। भूमंडलीकृत इस अर्थ.व्यवस्था में उसने सबसे पहले मध्यवर्ग की जरूरत को समझा तथा उसके क्रय.शक्ति की क्षमता के अनुसार उपभोक्ता वस्तुओं का विकास किया। उदाहरण के रूप में हम देख सकते हैं कि भारत में महंगी गाड़ियाँ बनाने वाली बड़ी कंपीनिया भारतीय मध्यवर्ग और उसके बजट को ध्यान में रखते हुए छोटी एवं सस्ती गाड़ियाँ बनाने लगी हैं। सालाना ढाई लाख से लेकर दस लाख तक कमाने वाले करोड़ों लोग ऐसी गाड़ियों के मालिक हैं।

आर्थिक उदारीकरण पर ध्यान दें तो हम पाते हैं कि इसके समर्थकों ;आर्थिक उदारीकरणद्ध की ताकतों के आगे भारतीय राजनीतिक.व्यवस्था आज कमजोर.सी हुई है। हजारों एकड़ जोत जमीन किसानों को कम मुआवजा देकर राज्य सरकारें बड़े.बड़े पूँजीपतियों को कम दामों में

उपलब्ध करा रही हैं। इसी जमीन पर बने उत्पाद को शोरूम में बेचे जा रहे हैं और यह कहना स्वाभाविक होगा कि इसके खरीददार भी यही नव.मध्यवर्ग है।

नया मध्यवर्ग आज अपने ही जड़ों से कटा हुआ है। घर.परिवार और उसकी संस्कृति को छोड़ गाँव से दूर ऐसे लोगों ने पारंपरिक समाज को काफी हद तक बदल दिया है। प्रियदर्शन इस नए मध्यवर्ग में हुए पारंपरिक और सांस्कृतिक बदलाव की ओर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं. यह नया मध्यवर्ग क्या भारत में रातों.रात उग आया है, आखिर वैश्विक आर्थिक शक्तियाँ इतनी ताकतवर क्योंकर हुई कि उन्होंने एक पारिवारिक भारतीय समाज को इस हद तक बदल डाला, इस सवाल के जवाब में कुछ और सच्चाईया हमारे सामने आ खड़ी होती हैं। दरअसल यह इक्कीसवीं सदी एक विस्थापित भारत की सदी भी है. सिर्फ उन्हीं विस्थापितों की नहीं जो आर्थिक विकास के नाम पर अपनी जमीन से जबरन उजाड़े गए हैं, ऐसे विस्थापितों की भी जो अपनी आर्थिक बेहतरी के लिए अपना घर, शहर और राज्य छोड़कर दूसरे शहरों और राज्यों में अपना ठिकाना बना रहे हैं। कल तक यह मध्यवर्ग अपने घरों में मगही, मैथिली, बुंदेलखंडी, भोजपुरी या राजस्थानी बोलता था और स्कूल में हिंदी। आज वह घर में हिंदी बोलता है और स्कूल में अंग्रेजी। तो अपनी भाषिक.सांस्कृतिक जमीन से कटे इस तबके के लिए अपने हित और हम सबसे बड़े हैं। यहाँ आकर हम पाते हैं कि पुराने पूर्वाग्रह भी इसके भीतर ज्यों.के.त्यों बने हुए हैं। शिक्षण संस्थानों में दाखिले में आरक्षण का मामला हो या अल्पसंख्यकों को मुख्यधारा से जोड़ने काए इस तबके का रवैया इस भोले तर्क के साथ इन सबके विरोध में रहा है कि सबको बराबरी के अवसर मिलने चाहिए। यह रवैया इस तथ्य की उपेक्षा करता है कि अपनी ऐतिहासिक स्थितिए अपने आर्थिक साधनों और भूमंडलीकृत दुनिया से अपने आसान गठजोड़ की वजह से इस वर्ग को जो विशेषाधिकार मिला है, वह दूसरों को हासिल नहीं है।15 उपर्युक्त संदर्भों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह नया मध्यवर्ग जो आज के समय में सबसे बड़ा उपभोक्ता वर्ग है वह हर समुदायए जाति.विशेष ;किसी जाति.विशेष या समुदाय से कम या ज्यादाद्ध से आता है जो सुधार का लाभ भी पहले लेता है। यह नव.मध्यवर्ग आज किश्तों से उपभोक्ता वस्तुओं को खरीद रहा है और आसानी से ऋण दिलाने के लिए फर्मे नए.नए तरीके ईजाद कर रही हैं। यही कारण है कि आज क्रेडिट कार्ड करोड़ों का आँकड़ा पार कर चुका है।

मध्यवर्ग से जुड़े हुए कुछ बुनियादी तथ्य

1 अगले दो दशकों में विश्व में मध्यवर्ग की आबादी में तीन अरब की बढ़ोत्तरी होने की संभावना है, जिसकी दो.तिहाई आबादी एशिया में होगी।

2 2025 में मध्यवर्ग की तादाद भारत की वर्तमान आबादी का 41 प्रतिशत हो जाएगी यानि तब मध्यवर्गियों की संख्या 60 करोड़ हो जाएगी।

3 भारत में जिस व्यक्ति की वार्षिक आय 90 हजार से दो लाख रुपए है, उसकी गिनती मध्यवर्ग में की जाती है।

4 1998 में देश में हजार में से मात्र 12 व्यक्तियों के पास मोबाइल फोन था, जबकि अब सौ में से 80 व्यक्ति के पास मोबाइल फोन है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

5 मध्यवर्ग में भ्रूण हत्या आम बात है और लिंग परीक्षण पर मध्यवर्ग काफी पैसा खर्च करता है।

6 2004 में घरेलू पर्यटकों कि संख्या लगभग 37 करोड़ थी, जो अब दोगुनी हो गई है।

7 मध्यवर्ग के लोग बढ़-चढ़कर आधुनिकता को अपना रहे हैं मगर वे उतने ही पारंपरिक ;पूजा.पाठ करने वाले एक ज्योतिषी पर यकीन करने वाले भी हैं।

8 स्थानीय दर्जी से कपड़े सिलवाने की बजाए मध्यवर्ग के लोग सिले.सिलाए कपड़े खरीदना ज्यादा पसंद करते हैं। परंपरागत तेल वाले दिए जलाने की बजाए इलेक्ट्रॉनिक दिए खरीदने का चलन इधर बढ़ा है। देसी मिठाइयों की तुलना में चॉकलेट.केक खरीदने वालों की संख्या बढ़ी है।

9 मध्यवर्ग की खेलों में भी रुचि बदली है। अब इस वर्ग को गोल्फ जैसे महंगे खेल पसंद आते हैं। वर्तमान में करीब पाँच लाख लोग नियमित रूप से गोल्फ खेलते हैं। भारत में 270 गोल्फ कोर्स है।

10 एक सर्वे के मुताबिकए मध्यवर्ग के 85 प्रतिशत लोग जातिगत आरक्षण का समर्थन नहीं करते हैं, जबकि 27 प्रतिशत लोग शादी में जाति को प्राथमिकता नहीं देते हैं।

11 नौकरी करने वाली मध्यवर्गीय महिलाओं की संख्या में अप्रत्याशित रूप से बढ़ोत्तरी हुई है, जिससे यह मिथ टूट रहा है कि महिलाओं का कार्य.क्षेत्र रसोई तक सीमित होता है।16

धर्म के प्रति दृष्टि

धर्म का समाज से हमेशा गहरा नाता रहा है। जीवन और उससे जुड़े हुए चीजों को धर्म और उसकी शक्तियाँ काफी हद तक प्रभावित करती रही हैं। लेकिन भूमंडलीकरण के बाद नव.मध्यम वर्ग में धर्म के प्रति एक नई दृष्टि का विकास हुआ है। यह नया मध्यवर्ग मंदिर में दर्शन हेतु कई घंटों लाइन लगा तो सकता है, लेकिन मंदिर.मस्जिद जैसे मुद्दे पर खामोश रहता है। वह सांप्रदायिक भेदभाव के प्रति कायल न होकर बल्कि धार्मिक.सौहार्द्र पर विश्वास करने लगा है। अयोध्या के मामले में दिए गए इलाहाबाद हाईकोर्ट का फैसलाए नया मध्यवर्ग के लिए खासकर हिंदू.मुस्लिम की कोई खास प्रतिक्रिया न होना इनका सर्वोत्तम उदाहरण है। इस बात की भी गवाही है कि यह नया मध्यवर्ग भौतिक संसाधनों की प्राप्ति में इतना व्यस्त है कि उसे धर्म और उससे जुड़े हुए मुद्दों पर कोई विमर्श या आंदोलन करने की फुर्सत नहीं है। अगर इस विषय पर वह कभी कुछ कहता भी है तो धर्म से विरक्त होकर या फिर धर्म की रूढ़ि में जकड़ा होकर।

इधर के दशकों में नव.मध्यम वर्ग में विवाह और सेक्स को लेकर काफी बदलाव दिखाई दे रहा है। अखबारों में छपने वाले वैवाहिक विज्ञापनों में ज़्यादातर कॉन्वेंट से पढ़ी.लिखी लड़कियों की माँग ज्यादा रहती है। क्योंकि अंग्रेजी में पढ़ी.लिखी लड़की को पश्चिमी संस्कृति और सभ्यता को अपनाने में ज्यादा आसानी होती है। साथ ही असीमित आवश्यकताओं की वजह से नौकरी करने हेतु इन महिलाओं को घर से बाहर निकलना पड़ा। स्त्री.पुरुष के नौकरी करने से साथ ही एक जगह नौकरी न होने से दूर रहने के लिए ये विवश हैं। इस स्थिति में परिवार का टूटना स्वाभाविक था ही साथ ही एक.दूसरे को सहारा देने जैसे परंपरागत मूल्यों का क्षरण भी हुआ है। यही कारण है कि नव.मध्यवर्ग में तलाक आज आम बात है। शहरी नव.मध्यमवर्ग में पति और

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2015
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

पत्नी के कमाने या काम करने की वजह से बच्चों पर समय न देने की वजह से वे कई गलत आदतों के शिकार हो जाते हैं। नौकरीपेशा माता.पिता की संख्या बढ़ती जा रही है। घर की चाबियाँ लेकर स्कूल जाने वाले उनके बच्चे लौटकर बंद दरवाजा खोलते हैं। घर में उनकी मुलाक़ात सिर्फ टीवी से होती है। बचा.खुचा वक्त बच्चे के साथ गुजारते समय कामकाजी माता.पिता बच्चे के प्रति अपराधबोध से ग्रस्त होकर उसकी भरभाई कुछ अतिरिक्त लाड़.प्यार या खर्चे.पानी के जरिए करने की कोशिश करते हैं।....समाज और टीवी उन्हें निरंतर उपभोक्तावाद के शिकंजे में कसते जा रहे हैं। जैसे.जैसे बचपन गुजरता है, वैसे.वैसे उपभोक्ता वस्तुओं को हासिल करने की उत्कट कामना उन पर हावी होती चली जाती है और उनके सभी प्रयास सिर्फ इसी ओर हो जाते हैं। यह प्रक्रिया जीवन के प्रति एकांगी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है।17

निष्कर्ष

कुल मिलाकर आज के मध्यवर्ग में जिस तरह का बदलाव दिखाई दे रहा है, वह सकारात्मक कम नकारात्मक ज्यादा है। उसने बिना विचार किये अनेक बातों को आधुनिकता के नाम पर अपने जीवन में शामिल कर लिया है। परिणामस्वरुप उसके जीवन में विचित्र प्रकार के बेचैनी भी दाखिल हो गयी है। आज उसकी प्रेरणाओं के केंद्र बदल गए हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति के दुष्परिणामों से वह अच्छी तरह परिचित हो गया है, परन्तु उससे निजात पाने का उपाय उसे नजर नहीं आ रहा है। श्यामसुन्दर दुबे के शब्दों में 'भोगवादी संस्कृति का प्राणघाती नशा न उसे जीने देता है और न मरने देता है।

संदर्भ.ग्रंथ

1 रामधारी सिंह दिनकर, आधुनिक बोध पृ. 13
2 लक्ष्मीकांत वर्मा, नई कविता के प्रतिमान, पृ 248
3 अखिलेश, तद्भव, अप्रैल 2013, ;हरबंस मुखिया, अपनी.अपनी आधुनिकता, पृ.89
4 अजय तिवारी, आधुनिकता पर पुनर्विचार, पृ 46
5 वही पृ 80
6 पवन कुमार वर्मा, हिंदी अनुवादक, अभय कुमार दुबे, भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान, पृ. 41
7 सुनील खिलनानी, हिंदी अनुवादक, अभय कुमार दुबे, भारतनामा, पृ 93
8 पवन कुमार वर्मा, हिंदी अनुवादक, अभय कुमार दुबे, भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान, पृ 41
9 बिपन चन्द्र, समकालीन भारत, पृ 37
10 पवन कुमार वर्मा, हिंदी अनुवादक, अभय कुमार दुबे, भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान; पृ. 52
11 सुनील खिलनानी हिंदी अनुवादक, अभय कुमार दुबे, भारतनामा, पृ 90
12 वही, पृ 92
13 अभय कमर दुबे ; लोकतंत्र के अध्याय, पृ 183
14ण् विष्णु नागर शुक्रवार 09 मई 2013 पृ 16
15 वही पृ 17
16 वही, पृ 16
17 पवन कुमार वर्मा, हिंदी अनुवादक, अभय कुमार दुबे, भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान पृ 156